आलस्य और अलबेलापन - 39

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ अभी मैजारिटी रिजल्ट में देखा जाता है **कई बातों में तो अच्छी तरह से पास हो गये हैं।** **सिर्फ अपने पुराने स्वभाव और संस्कार, जो कभी-कभी नये जीवन में इमर्ज हो जाते हैं। अपने व दूसरों के स्वभाव-संस्कार भी टक्कर खाते हैं। अपना कमजोर संस्कार दूसरे के संस्कार से टक्कर खाता है। यह कमजोरी अभी विशेष लक्ष्य को पहुँचने में विघ्न डालती है। फुल पास के बजाए पास मार्क दिला देती है।**

➳ _ ➳ **न अपने स्वभाव-संस्कार को संकल्प व कर्म में लाओ, न दूसरों के स्वभाव व संस्कार से टक्कर खाओ। दोनों में सहन शक्ति और समाने की शक्ति की आवश्यकता है।** यह फुल पास के समीप लाने नहीं देती और यही कारण है जो कहाँ अलबेलापन, कहाँ आलस्य आ जाता है। **तपस्या वर्ष में मन-बुद्धि को एकाग्र करना अर्थात् एक ही संकल्प में रहना है कि मुझे फुल पास होना ही है। अगर मन बुद्धि जरा भी विचलित हो तो दृढ़ता से फिर से उसको एकाग्र करो। (13.02.1991)**

➢ **संस्कार संस्कार से क्यों टकराते है ?**

➳ _ ➳ **1..'मैं' अंदर बैठा हुआ है**

→ जो स्वीकार करने को तैयार ही नहीं है की

■ **मैं भी गलत हो सकता हु**

▶ यह सूक्ष्म अभिमान ही है

→ मैंने जो सोचा वही होना चाहिये

→ मैंने जो किया

→ मेरे जो संकल्प है

→ मेरी जो प्लानिंग है

→ मेरी जो बुध्धि है

→ मेरा जो विवेक है

→ मेरी जो जजमेंट है

■ यह सब ही राईट है

■ ऐसा सोचते है तब दूसरी आत्माओ के साथ संस्कारो का टकराव होता है

➳ _ ➳ **2..यह विविधतापूर्ण ड्रामा है**

→ इसमें अनेक विविधता है

→ हरेक का संस्कार अलग है

→ हरेक के स्वभाव अलग है

→ हरेक की नेचर अलग है

→ हरेक के विचार अलग है

→ हरेक के संकल्प अलग है

→ हरेक की प्रालब्ध अलग है

→ हरेक का भोग अलग है

→ हरेक के हिसाब किताब अलग है

→ हरेक का भविष्य अलग है

→ हरेक के मन, बुध्धि, संस्कार अलग है

→ हरेक का रोग अलग है

→ हरेक की बीमारी अलग है

→ हरेक का इलाज अलग है

→ हरेक का भाग्य अलग है

→ हर आत्मा में अलग अलग रिकॉर्डिंग की हुई है

- और एक जन्म की रिकॉर्डिंग नही है
- कितने सारे जन्मो की रिकॉर्डिंग की हुई है
- कब कोनसा संस्कार इमर्ज हो जाय पता नहीं
- कब कोनसा संस्कार दब जाय और नया आ जाय पता नही

→ इसमें सब एक्टर का पार्ट अलग अलग है

- हरेक का अपना अपना पार्ट है
  - हर आत्मा वो नही कर सकती है जो मैं कर रहा हु

➳_ ➳ **3..संस्कार परिवर्तन की प्रक्रिया हरेक की अपनी अपनी है**

→ कोई बहुत तीव्र गति से कर लेता है

→ तो कोई बहोत स्लो

→ और किसी को तो यह भी पता नहीं होता है की परिवर्तन करना होता है

- सोचते है जो है
- जो चल रहा है
  - वही अरछा है

→ कोई तुरंत REALIZE कर लेता है

→ किसी को एक ही चीज समझने में 20 साल लग जाते है

→ कोई अभी अभी ज्ञान में आया है और तुरंत समझ जाता है

→ कोई ज्ञान में आते ही उड़ने लगता है

→ यह परिवर्तन की प्रकिया में

- हम जिस फ़ास्ट गति से दोड़ रहे है
  - यह नही हो सकता की
  - सब भी इसी फ़ास्ट गति से दोड़े

➳_ ➳ **4..लक्ष्य को भूले हुये है**

→ मर्ज हो गया है लक्ष्य

- की आय किस लिये थे
  - और हम कर क्या रहे है

➳_ ➳ **5..जब प्रेम की भावना कम हो जाती है**

→ तब टकराव उत्पन होता है

→ जहा प्रेम है,

- वहा खिट पिट हो ही नही सकती
- वहा समाने की शक्ति स्वतः आ जायेगी
  - प्रेम में कितना भी कुछ क्यों न हो जाय
  - हम सब कुछ अपने में सह लेते है
  - और टकराव से बचे रहते है

➳_ ➳ यह प्रभु परिवार है

➳_ ➳ यह महान आत्माओ का परिवार है

→ **जिनका चुनाव परमात्मा ने किआ है**

→ **एक एक आत्मा को परमात्मा ने स्वीकार किया हुआ है**

- **तो क्या उसकी चॉइस गलत हो सकती है**
  - हो ही नहीं सकती
- हमने उसे नही ढूंढा
- उसने हमे ढूंढा है
- न रंग देखा, न रूप देखा
- न जाती देखी, न देश देखा
- देखा तो बस एक रूहानी रंग देखा
- ज्योति बिंदु देखा
- मेरा है यह देखा

➳_ ➳ **संगठन में चलने हमे प्रेम को बढ़ाना है,**

→ तो सहन करने की शक्ति

→ और समाने की शक्ति

- दोनों स्वतः ही आ जायेगी

➳_ ➳ **सहनशीलता एक कवच है**

- **अध्यात्म का मार्ग अग्निपथ है**
- इस पथ पर चलने के लिये इस कवच की बहुत आवश्यकता है
  - नही तो जल कर खाक हो जायेंगे, ऐसा यह पथ है

➳_ ➳ **6..एक दुसरो का आपस में हिसाब किताब**

→ तो उस हिसाब किताब को प्रेम से चुक्तु करना है

- उसे और बढ़ाना नही है
- जो है उसे उतना ही रखना है
    - बदले की भावना
    - ईर्ष्या, द्वेष, धृणा की भावना रखके
    - उसे और बढ़ाना नही है

→ **नये हिसाब किताब**

→ **FRESH BONDAGES CREAT नही करना है**

→ **नया कार्मिक एकाउंट्स नही बनाना है**

- जो है उसीको चुक्तु करना है

→ किसी के भी साथ हमारे द्वारा नया हिसाब किताब की

- शुरुआत नहीं करनी है

→ जो चल रहा है उसे वैसे ही चलने देना है

- जबरदस्ती किसी को करेक्ट करना
- किसी को सुधारना
    - यह सब चीजे नही करनी है

➳_ ➳ **7..सेवाओ में कोनसी भावना है ?**

→ क्या निस्वार्थ भावना है ?

→ क्या नाम की भावना है ?

- अध्यात्म के मार्ग में सबसे बड़ी रुकावट कीर्ति / APPRECIATION / महिमा / प्रशंसा
    - अगर योगी इसे स्वीकार कर लेता है
    - तो वो गिर ही जाता है

→ यह एक अजीब प्रकार की माया है

- योगियों को इससे बचके रहना है

➳_ ➳ **ये जो नाम की इरछा है, वह सबसे खराब से खराब तृष्णा है**

→ यह जो किसी में अगर उत्पन हो गई,

- तो वो फिर कभी पूर्ण हो ही नही सकती है

➳_ ➳ **योगी अर्थात जो प्रशंसा को स्वीकार ही न करे**